भारतीय समकालीन कलाकार गोगी सरोज पाल के नारीवाद का विवेचनात्मक अध्ययन

चित्रकला विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्रा

ज्योति सत्संगी

शोध निर्देशिका

डॉ. लकी टॉक

असिस्टेंट प्रोफेसर

ड्राइंग एंड पेंटिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2024

विषय सूची

- **शोध संकल्पना**
- **सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**
- **परिकल्पना**
- **उद्देश्य**
- **चर**
- **कार्य प्रणाली**
- अनुसंधान अभिकल्प
- **प्रदत्त संकलन**
- प्राथमिक स्त्रोत
- द्वितीयक स्त्रोत
- **प्रतिदर्श का आकार**
- **सीमाएं**
- **निष्कर्ष**
- **आधुनिक युग में प्रासंगिक**

शोध संकल्पना

संसार का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ वेद है, जो की प्रमाणिक सत्य है। वेद भारतीय दर्शकों के लिए उत्तम ज्ञान एवं बुद्धिमता का माध्यम है। इसी प्रकार भारतीय चित्रकला संसार की सबसे पुरातन एवं उत्कृष्ट कलाओं में से एक है। भारतीय चित्रकला में सत्यं शिवं सुन्दरम् का महत्वपूर्ण रूप अन्तनिहित है, जो किसी अन्य देश एवं राष्ट्र की चित्रकला में दृष्टिगत नहीं होती। प्रागैतिहासिक युग के आदिमानव द्वारा चित्रण कार्य हमें पहाड़ो, गुफाओं एवं पत्थरों पर देखने को मिलता है। आरम्भ से ही मनुष्यों में चित्रकला बनाने की प्रवृत्ति पायी जाती है, साथ ही कला का उन्नत एवं अलौकिक रूप भी दिखाई देता है। वर्तमान में प्रत्येक कलाकार विभिन्न प्रकार के माध्यमों एवं तकनीकों के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है, जो अत्यधिक कठिन, रोचक एवं रोमांचकता को प्रदर्शित करते है। प्राचीन काल से अब तक मनुष्य ने निरन्तर कला साधना में नवीनतम खोजें की जिसके द्वारा आज भारतीय कला जगत गौरवान्वित है।

सृष्टि के इतिहास में आरम्भ से ही नारी की विद्यमानता रही है। शतपथ ब्राह्मण द्वारा वर्णित है कि सृष्टि के प्रारम्भ में आत्मा ही थी जिसे दो भागों में विभाजित किया गया, नर एवं नारी के स्वरूप में। तत्पश्चात् अतीत से ही नारी का रूप मानव की प्रेरणा बिन्दु रही है। भारतीय चित्रकला की सबसे श्रेष्ट विशिष्टता का आधार आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक था। जिसके द्वारा हमें जड़-चेतन एवं पशु-पक्षी आदि का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत प्राप्त होते है जैसे- सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई के फलस्वरूप जो कलाकृतियाँ प्राप्त होती हैं उनमें अत्यन्त कोमल मुद्रा में सन्तुलित नारी की आकृति भी प्राप्त हुयी है। मोहनजोदड़ो एवं हडप्पा से भी नारी की मूर्तियाँ मातृ देवीयों के रूप में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त अजन्ता की गुफाओं में हमें उड़ती हुई अप्सराएँ, नृत्यांगनाओं की कलाकृतिया प्राप्त होती है। इसी प्रकार बाघ, सिगिरिया एवं सितन्नवासल आदि गुफाओं में नारी की आकृतियाँ प्राप्त होती है जैसे – अप्सरा, पुष्प लिये महिला, नृत्यांगनाएँ आदि प्राप्त होती हैं।

मध्यकालीन चित्रकला एवं मुगल शैली से भारतीय चित्रकला में नारी के स्वरूप की अवनति युग का प्रारम्भ माना जाता है, परन्तु इसी के साथ राजस्थानी चित्रण शैली में श्रृंगारिक नायिकाओं के विशिष्ट रूपों का चित्रण आरम्भ हो चुका था। जिसमें नायिकाओं का सौन्दर्य उनकी सबसे प्रमुख विशेषता रही है जैसे- किशनगढ़ शैली से प्राप्त बनी-ठनी जो राधा जी का ही शैलीबद्ध आदर्श रूप है। इसी प्रकार आधुनिक चित्रकला में भी ऐसे बहुत से कलाकार है, जिनकी कलाकृतियाँ कला जगत की अमूल्य निधि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है जिनमें से एक अमृता शेरगिल है जिन्होंने लगातार महिलाओं की स्थिति को अपने चित्रों के द्वारा प्रस्तुत किया है। राजा रवि वर्मा इन्होने भी अपनी कला के द्वारा नारी सौन्दर्य के विविध आयामों को प्रस्तुत किया है। जिनमें शकुन्तला, भिक्षुणी, सीता हरण, मेनका आदि महिलाओं को दर्शाया है। इन्हीं कलाकारों में से एक है, सर्वागिण प्रतिभावान कलाकार गोगी सरोज पाल, जिन्होंने अपनी कला प्रतिभा के द्वारा भारतीय चित्रकला में विशिष्ट भूमिका निभाई है। गोगी सरोज जो आधुनिक भारतीय कला में पहली नारीवादी महिला चित्रकार के रूप में भी जानी जाती है। जिन्होंने निरन्तर महिलाओं की स्थिति एवं जीवन को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इन्होने महिलाओं का जीवन, उनकी इच्छाएँ, मजबूरियाँ एवं स्त्री की जटिलताओं को अपने चित्रों के द्वारा दर्शाया है। इन्होने किसी एक माध्यम में सीमित न रहकर विभिन्न माध्यमों में कार्य किया है। जिसमें गौचे, तेल, सिरेमिक, बुनाई, ग्राफिक, मूर्तिकला एवं फोटोग्राफी शामिल है। मैं इनकी कलाकृतियों से अत्यधिक प्रभावित हुई तत्पश्चात् ही मैंने इनकी कृतियों का चयन अपने शोध कार्य हेतु किया।

जिसके द्वारा मैं कलाकार के व्यक्तित्व व कृतित्व में अधिक ज्ञान अर्जित कर उनकी कलाकृतियों का वर्णात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर सकू।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध को आधार प्रदान करने के लिए साहित्य का पुनरावलोकन सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। शोध प्रारम्भ करने से पूर्व, उस विषय पर किये गये शोध, उससे सम्बन्धित साहित्य व शोध पत्रिका आदि का गहन अध्ययन व अवलोकन अत्यन्त आवश्यक है। शोध विषय से जुड़े साहित्य का पुनरावलोकन करने से हम अपने शोध को वर्तमान व भविष्य की परिस्थितियों के अनुरूप अधिक तथ्यपूर्ण बना सकते हैं। मैंने अपने शोध के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु विभिन्न पुस्तकों व इन्टरनेट वेबसाइट्स का अध्ययन किया। जिसमें सर्वप्रथम मैंने लेखक **महेन्द्र वर्मा** द्वारा रचित पुस्तक **'भारतीय चित्रकला की परम्परा'** जिससे मैंने कला के प्रारम्भिक इतिहास की जानकारी प्राप्त की। लेखक **रामप्रताप त्रिपाठी** द्वारा सम्पादित **'सम्मेलन पत्रिका 'कला अंक'** का अध्ययन किया, जिसके अन्तर्गत मैंने भारतीय चित्रकला में कला के स्वरूपों का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त लेखक **प्राणनाथ मागो** द्वारा रचित पुस्तक **'भारत की समकालीन कला एक परिपेक्ष्य'** जिससे मुझे वर्तमान के अनेक कलाकारों की कलागत विशेषताओं के बारे में जानकारी मिली एवं इसी पुस्तक में मैंने मेरी मुख्य कलाकार गोगी सरोज पाल के व्यक्तिगत व कलागत पक्ष के बारे में जानकारी प्राप्त हुयी। लेखक **दिनेश चंद्र गुप्त** द्वारा रचित पुस्तक **'भारतीय चित्रकला में नारी अंकन'** जिससे मैंने नारी के उद्भव एवं विकास के विषय में जानकारी प्राप्त की। लेखक **शुकदेव श्रेत्रिय** द्वारा रचित **'चित्रकला के मूलाधार'** जिसके द्वारा मैंने कला के मूल आधारों के बारे में अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त मैंने विभिन्न इन्टरनेट वेबसाइट्स के माध्यम से कलाकार की कला शिक्षा, व्यक्तिगत कार्य एवं जीवन शैली का अध्ययन किया।

परिकल्पना

किसी भी शोध कोर्य को आदर्श रूप व दोष रहित प्रस्तुत करने के लिए पूर्व में ही शोध परिकल्पना तैयार करना अति आवश्यक है। जिससे हम अपने शोध कार्य को भली प्रकार पूर्ण कर सकें। इस परिकल्पना को तैयार करने से पूर्व शोध समस्या का टाँचा तैयार करना भी आवश्यक होता है। इसके लिए मैं आधुनिक कलाकार गोगी सरोज पाल की कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगी।

गोगी सरोज ने अपनी कृतियों में निरन्तर महिलाओं की स्थितियों को दर्शाती है। इनके चित्रों के विषय आमतौर पर महिलाएं ही रही है। गोगी सरोज के शुरूआती चित्रण कार्य में हमें यर्थाथवादी शैली का रूप देखने को मिलता है। लेकिन निरन्तर समय के साथ उनके चित्रों में काल्पनिकता का रूप प्रदर्शित होने लगा था। कलाकार ने अपने चित्रों में नारी से सम्बन्धित विभिन्न भेदों के प्रस्तुतीकरण हेतु कल्पना व नियमों के साथ कार्य किया है। इसी प्रकार उनकी कामधेनु श्रृंखला चित्र में उन्होंने इच्छापूर्ण करने वाली गाय की मूर्तियाँ एवं चित्र बनाये जिनके शीर्षक नारी सादृश है। गोगी सरोज ने नारी के नारीत्व व उनके मनोभावों पर विशेष रूप से अपना ध्यान केन्द्रित करती है। इस शोध के माध्यम से कलाकार की कृतियाँ, व्यक्तित्व, कृतित्व के वर्णात्मक मूल्यांकन पर प्रकाश डाला जायेगा।

उद्देश्य

इस शोध प्रबन्ध के अनुसार "**भारतीय समकालीन कलाकार गोगी सरोज पाल के नारीवाद का विवेचनात्मक अध्ययन**" के कला कृतियों का वर्णात्मक अध्ययन हेतु प्रमुख उद्देश्य व लक्ष्य निम्नलिखित हैं -

- गोगी सरोज की शिक्षा व बाल्यकाल से कलाकार बनने तक की जीवन यात्रा का वर्णन एवं व्यक्तित्व का विवेचन करना है।
- कलाकार की कलाकृतियों के माध्यम से उनकी चित्रकला से अवगत करना है।
- कलाकार की कलात्मक रचना के नवीन तथ्यों को कला तत्वों एवं कला सिद्धान्तों के साथ विवरण।
- इस शोध के अन्तर्गत कलाकार की कृतियों के विषय तथा विभिन्न माध्यम एवं तकनीकी पक्ष का अध्ययन।
- चित्रकार के विषय में विभिन्न स्त्रोतों से सूचना एकत्र कर उनकी कला का आधुनिक कला के क्षेत्रों में अविस्मरणीये योगदान।
- कलाकार ने आधुनिक समाज में महिलाओं के दृष्टिकोण को अत्यन्त ही दृढ़ता से व नारी की बढ़ती जिम्मेदारियों एवं संघर्ष को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ अपनी कला रूपों में प्रस्तुत किया है।

चर

मेरे शोध प्रबन्ध के चरों के आधार सूत्र निम्नलिखित है -

- चित्रों के विषय
- कला के तत्व

- कला के सिद्धांत
- स्थानीय भ्रमण
- विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय
- समकालीन कलाकारों का साक्षात्कार
- समाचार पत्र पत्रिकायें
- इंटरनेट वेब्साइट्स

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प-

इस शोध कार्य का अध्ययन कलाकार गोगी सरोज के व्यक्तित्व व कलाकृतियों के वर्णनात्मक अनुसंधान पर आधारित रहेगा।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्तों के एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित रहेंगे।

प्राथमिक स्त्रोत – कलाकार गोगी सरोज पाल की कृतियाँ।

द्वितीयक स्त्रोत - पुस्तकें, जनरल, इन्टरनेट वेबसाइट, संग्रहालयों एवं पुस्तकालयों का भ्रमण, सामाचार पत्र-पत्रिकाएँ आदि।

मेरी सम्मानीय निर्देशिका व विषय-विशेषज्ञों के साथ विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार

मैंने शोध कार्य हेतु लगभग 150-200 प्रतिदर्शों का चयन किया है।

प्रदत्तों के एकत्रीकरण की प्रविधि

प्रदत्त एकत्रीकरण की प्रविधि अवलोकन व साक्षात्कार पर आधारित रहेगी।

सीमाएँ

एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वह अपने शोध कार्य को अपने संस्थान की समय व सीमा को देखते हुए पूर्ण करने का प्रयास करें। मैंने शोध हेतु कलाकार गोगी सरोज पाल का चयन किया तथा उन्हें अपने शोध

का विषय बनाया। कलाकार गोगी सरोज पाल के दिवंगत होने के करण मैं उनका साक्षात्कार नहीं कर सकती।

निष्कर्ष

इस शोध प्रबन्ध में समस्त प्रक्रियाओं के आधार पर मैंने नारीवादी कलाकार गोगी सरोज पाल के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के कलात्मक पक्ष व उनकी विशिष्ट शैली का अध्ययन किया है। कलाकार गोगी का आधुनिक कला जगत में अविस्मरणीय योगदान रहा है। गोगी सरोज पाल जिन्होंने रंगो के माध्यम से स्त्री शक्ति के सार को उजागर किया है। कलाकार गोगी ने विभिन्न माध्यमों में कार्य किया, तथा नारी चित्रण करना कलाकार की कलाकृतियों का महत्वपूर्ण लक्ष्य था। उनकी कला में 'किन्नारी; पौराणिक पक्षी-महिला, तथा 'कामधेनु; इच्छा पूर्ण करने वाली गाय जैसी मजबूत महिला नायक शामिल थी। इसके फलस्वरूप मैं उनके योगदान के आधार पर उनके कार्यों का वर्णनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

आधुनिक प्रासंगिकता

आधुनिक भारत में ऐसी बहुत सी महिला कलाकार है, जिनकी कलाकृतियाँ कला जगत की अमूल्य निधि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। इन्हीं में से एक गोगी सरोज पाल हैं, जिन्हें अग्रणी नारीवादी आवाजों में से एक बताया है, जो पारंपरिक चित्र निर्माण से परे होकर नारीत्व की सामाजिक वास्तविकताओं की खोज करती थीं। कलाकार ने भिक्षुओं के जीवन से प्रेरित होकर कन्या भ्रूण हत्या के मुद्दे पर प्रकाश डालने वाली “आग का दरिया” सहित विभिन्न विषयों को संबोधित किया है। वर्ष 2012 में दिल्ली में सामुहिक बलात्कार मामले के जवाब में उन्होंने निर्भया को समर्पित एक श्रृंखला बनाई, जिसमें हंसिया लिए एक क्रोधित महिला को दर्शाया गया है। उनकी विरासत भारतीय कला में एक उज्जवल मील के पत्थर के रूप में कायम है, जो अपने पीछे एक ऐसा काम छोड़ गई है जो ताकत, सुन्दरता एवं सामाजिक मानदंडों को तोड़ने की प्रतिबद्धता के साथ प्रतिध्वनित होता है। जिसके फलस्वरूप मेरा शोध प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञान वर्धन में भी सहायक सिद्ध होगा।

भारतीय समकालीन कलाकार गोगी सरोज पाल के नारीवाद का विवेचनात्मक अध्ययन

विषय अनुक्रमणिका

भूमिका: भारतीय चित्रकला में नारी रूपों का सिंहावलोकन

प्रथम अध्याय: समकालीन कलाकार गोगी सरोज पाल का व्यक्तिगत परिचय

1.1 जीवन परिचय

1.2 शिक्षा व प्रेरणा स्त्रोत

1.3 पुरस्कार व सम्मान एवं प्रमुख प्रदर्शनियाँ

द्वितीय अधयाय: कलाकार गोगी सरोज के सृजनात्मक संसार का वर्गीकरण

2.1 विषय-वस्तु –

2.1.1 स्त्री का पारम्परिक चित्रण

2.1.2 स्त्री का काल्पनिक चित्रण

2.2 माध्यम एवं तकनीक –

2.2.1 मूर्तिकला - सिरेमिक

2.2.2 ग्राफिक

2.2.3 चित्रकला (पेंटिंग) –

- तेल
- गौचे
- ऐक्रेलिक
- डिजिटल

तृतीय अध्याय: गोगी सरोज पाल के चित्रों का कला तत्वों एवं सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन

3.1 कला तत्वों के आधार पर

3.2 संयोजन सिद्धान्तों के आधार पर

चतुर्थ अध्याय: भारतीय कलाकार गोगी सरोज की शैलीगत विशेषताएं एवं कालक्रमानुसार चित्रों में परिवर्तन

4.1 प्रारम्भिक चित्रण की शैलीगत विशेषताएं (1962 – 1982)

4.2 माध्यमिक चित्रण की शैलीगत विशेषताएं (1983 – 2004)

4.3 अन्तिम चित्रण की शैलीगत विशेषताएं (2005 – 2023)

पंचम अध्याय: आधुनिक भारतीय चित्रकला जगत में गोगी सरोज का महत्व व योगदान।

उपसंहार

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची/ Bibliography

इंटरनेट वेब्साइट्स

चित्र फलक सूची

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका – भूमिका के अन्तर्गत भारतीय चित्रकला में नारी रूपों का सिंहावलोकन की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रथम अध्याय – के अन्तर्गत समकालीन कलाकार गोगी सरोज का व्यक्तिगत परिचय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूँगी, जिसके अन्तर्गत कलाकार का जीवन परिचय, शिक्षा व प्रेरणा स्त्रोत, पुरस्कार व सम्मान एवं प्रमुख प्रदर्शनियों पर भी प्रकाश डालूंगी।

द्वितीय अध्याय – में मैं कलाकार गोगी सरोज के सृजनात्मक संसार का वर्गीकरण को प्रस्तुत करूँगी, जिसके अन्तर्गत स्त्री का पारम्परिक चित्रण, स्त्री का काल्पनिक चित्रण एवं अन्य माध्यमों को भी प्रस्तुत किया जायेगा।

तृतीय अध्याय – के अन्तर्गत गोगी सरोज पाल के चित्रों का कला तत्वों एवं संयोजन सिद्धान्तों के आधार पर वर्णन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय – में भारतीय कलाकार गोगी सरोज की शैलीगत विशेषताएं एवं कालक्रमानुसार चित्रों में परिवर्तन जिसके अंतर्गत प्रारम्भिक चित्रण, माध्यमिक चित्रण, एवं अंतिम चित्रण की शैलीगत विशेषताओं पर चर्चा करूँगी ।

पंचम अध्याय – आधुनिक भारतीय चित्रकला जगत में गोगी सरोज का महत्व व योगदान का वर्णन करूँगी।

दिनांक : शोध छात्रा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची/ BIBLIOGRAPHY

- अग्रवाल वासुदेवशरण - (1966), भारतीय कला, प्रारम्भिक युग से तीसरी शती इसवी तक, पृथिवी वाराणसी प्रकाशन
- कलिंगर, आर. जी. – कला के सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गुप्त चंद्र ,दिनेश – (2003), भारतीय चित्रकला में नारी अंकन, धर्मा प्रकाशन, सावित्री पार्क मधवापुर, इलाहाबाद
- गोस्वामी, प्रेमचन्द्र – (1995), आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशन, जयपुर अकादमी
- जोशी, अर्चना – (2007-08), विश्व इतिहास में महिला चित्रकार, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर
- डे नाथ, शैलेन्ड - भारतीय चित्रकला पद्धति
- द्विवेदी, प्रेमशंकर - (2011), भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्धति, बी. एच. न्यू वाराणसी।
- मागो, प्राण नाथ - (2021), भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
- राय, नीहार रंजन - (1978), भारतीय कला का अध्ययन
- वर्मा, महेन्द्र – (2006), भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन
- शास्त्री त्रिपाठी, रामप्रताप - (1880), कला अंक सम्मलेन पत्रिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
- सरोज पाल, गोगी – (2009), फुलकारी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पटना, इलाहाबाद
- Chaitanya, Krishna – (1994), A History of Indian painting The Modern period, Shakti Malik, Abhinav Publications, New Delhi
- Khanna Balraj and Kurtha Aziz - (1998), Art of Modern India, Thames & Hudson

- Nagar, Shantilal – miniature painting and sculptures, Published by: B.R. Publishing corporation, A Division of BRPC (India) tri Nagar Delhi.

INTERNET WEBSITES

- http://www.saffronart.com/search/searchResult.aspxall=5&exh=1&past=1&pastsl=1&sq=gogi%20saroj%20pal&artistid=18
- https://www.voiceoflucknow.com/death-of-painter-gogi-saroj-pal-is-an-irreparable-loss-suman-kumar-singh/
- https://www.tribuneindia.com/news/arts/ode-to-the-nayikas-of-gogi-saroj-pal-587187
- https://www-theweek-in.translate.gogi/leisure/society/2020/04/26/gogi-saroj-pals-kinnari-is-in-sync-with-her-solitude.html
- https://www-indiannetzone-com.translate.goog/22/gogi-saroj-pal-indian-painter.htm
- https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/gogi-saroj-pal
- https://www.exoticindiaart.com/book/details/pulkari-hindi-shot-stories-nzu71

चित्र फलक

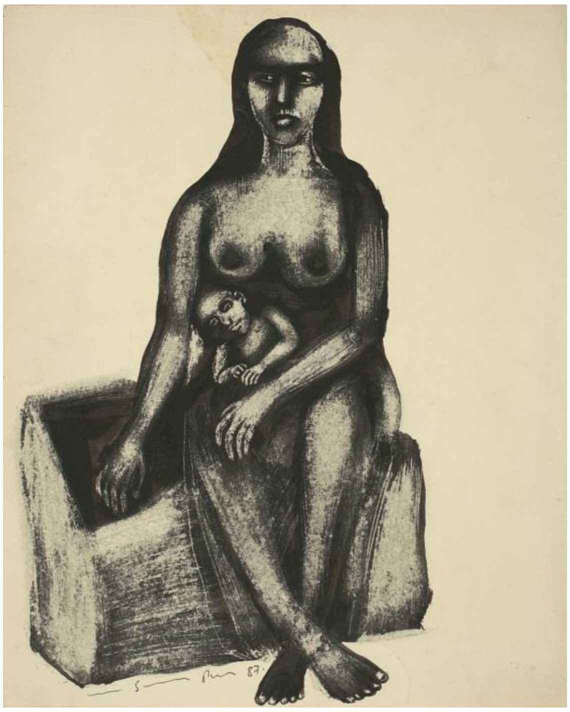

चित्र 1 माँ और शिशु
माध्यम - कागज पर स्याही
आकार - 23.0 x 18.0 in. / 58.4 x 45.7 cm. वर्ष – 1987

चित्र 2 नाचता हुआ घोड़ा
माध्यम – गौचे
आकार - 32.5 x 25 cm. (12.8 x 9.8 in.), वर्ष – 1989

चित्र 3 शीर्षकहीन
माध्यम – केनवास पर तेल रंग
आकार - 122 x 91.5 cm. (48 x 36 in.), वर्ष – 1990

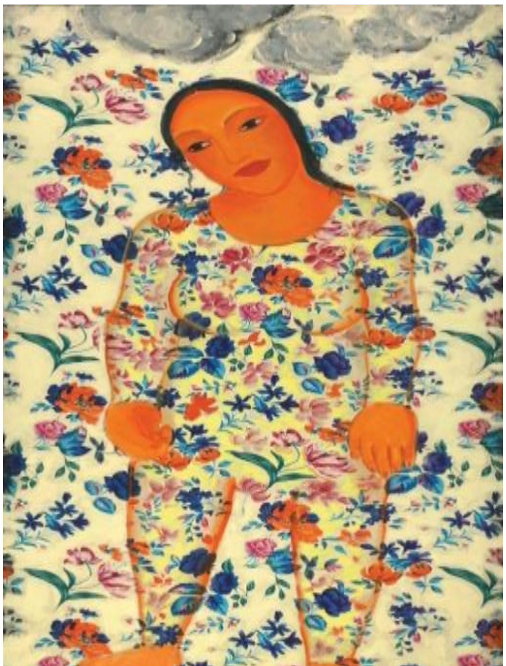

चित्र 4 ये सभी फूल आपके लिये हैं
माध्यम - कैनवास पर चिपकाए गए मुद्रित कपड़े पर ऐक्रेलिक
आकार - 190.5 x 91.4 cm. (75 x 36 in.), वर्ष - 2002

चित्र 5 आग का दरिया

माध्यम – कागज पर गौचे

आकार - 64 x 40 in (162.6 x 101.6 cm)

चित्र 6 कामधेनु

माध्यम – कैनवास पर डिजिटल प्रिंट

आकार – 25.0 in X 31.0 inches, वर्ष– 2012

चित्र 7 कामधेनु
माध्यम - फाइबर ग्लास पर ऐक्रेलिक रंग
आकार – 6.5 X 5.0 X 6.5 inches.
वर्ष – 2012

चित्र 8 कामधेनु
माध्यम – फाइबर ग्लास पर ऐक्रेलिक रंग
आकार – 21.0 X 13.0 X 15.0 inches
वर्ष – 2012

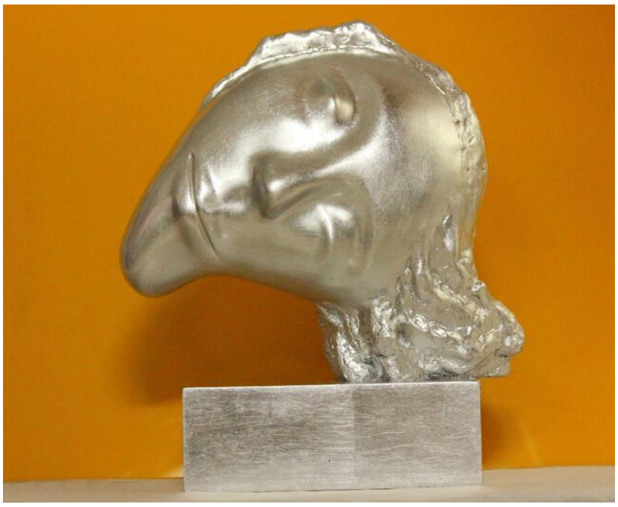

चित्र 9 कामधेनु

माध्यम – फाइबर ग्लास पर चांदी की पन्नी

आकार – 6.5 X 5.0 X 6.5 inches.

वर्ष – 2015